प्रथम अध्याय

"अज्ञेय" का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

किसी साहित्यकार की कृति का मूल्यांकन करने के लिए उसके जीवन की जानकारी आवश्यक है, यह बात विवादास्पद हो सकती है। "अज्ञेय" के इन उपन्यासों में व्यक्त जीवन विषयक तत्त्वज्ञान ही इस अध्ययन का विषय है। "अज्ञेय"जी की जीवन विषयक दृष्टि की पहचान करने के लिए आगे बढ़ने से पहले उनके जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व का थोडे में परिचय प्राप्त करना योग्य होगा।

जीवनवृत्त -

हिन्दी साहित्य में "अज्ञेय" नाम बहुत व्यापक हो गया है। बहुत से लोग इसे उपनाम न मानकर पूर्ण नाम ही मानते हैं। "अज्ञेय" का पूरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन है। "आपका जन्म 7 मार्च, सन् 1911 ई. को (फाल्गुन शुक्ल सप्तमी संवत 1967) को उत्तर प्रदेश में देवरिया जिल्हे के "कासिया" नामक गाँव में हुआ था। "कसिया" का संस्कृत नाम कुशीनगर है। और भगवान बुध्द ने इस जगह पर निर्वाण प्राप्त किया था।"[1]

"अज्ञेय"जी के पूर्वज पंजाब में रहनेवाले भणोत सारस्वत ब्राहमण थे। आपके दादा संस्कृत के विद्वान थे। वे आर्थिक दृष्टि से असफल होते हुए भी अपनी विद्वत्ता के कारण समाज में सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। इसी आर्थिक स्थिति में ही "अज्ञेय" के पिताजी हीरानंद शास्त्री बड़े हुए। हीरानंद शास्त्री पुरातत्त्व विभाग में बड़े अधिकारी थे। पिताजी के कारण "अज्ञेय"जी विद्वानों के संपर्क में रहते थे। परंतु सन 1946 ई. में हीरानंदजी की गुरूदासपुर में मृत्यु हुई।

"अज्ञेय"जी ने संस्कृत, फारसी और अंग्रेजी की शिक्षा अपने घर पर ही पाई। उन्होंने सन 1925 ई. में हायस्कूल की और सन 1927 ई. में इंटरमीडिएट की परीक्षाएँ पास कीं। इ.सन. 1929 ई. में बी.एस्सी. की परीक्षा लाहौर के फारमन के कॉलेज से पास की। उन्हें अंग्रेजी साहित्य, बाईबिल ज्ञान और रवीन्द्रनाथ ठाकुर के अध्ययन के लिए सोने का पदक प्राप्त हुआ। इ.सन 1929 में आपने प्रथम वर्ष (अंग्रेजी) में प्रवेश कर लेने पर लाहौर में आपके क्रांतिकारी जीवन का प्रारंभ हुआ। हिन्दुस्थान

सोशलिस्ट, रिपब्लिकन पार्टी के सदस्य बन जाने पर आपका आजाद, सुखदेव, भगवतीचरण बोहरा आदि से परिचय हुआ। करिबन पाँच वर्षों तक आपने क्रांतिकारी जीवन बिताया। क्रांतिकारी जीवन का समय 1929 से आरंभ होकर 1936 तक है। इसी अवधि में 1934 के मध्य में घर के अंदर ही नजरबंद हो गये। जब घर आये तब एक साथ छोटे भाई, माता इनकी मृत्यु और पिताजी की नौकरी से निवृत्ति - आदि घटनाओं ने आपके चित्त में अकेलापन पैदा किया। सात साल के इस समय से आपके मन पर गहरा असर पड़ा।

सन 1936 ई. में "अज्ञेय" उपजिविका के लिए काम करने लगे। कुछ काल तक आग्रा के समाचार पत्र "सैनिक" के संपादकीय विभाग में काम करते रहे। सन 1937 ई. में बनारसीदास चतुर्वेदी के आग्रह पर "विशाल भारत" (कलकत्ता) के संपादकीय विभाग में काम करने लगे। जुलाई 1940 में "अज्ञेय" ने संतोष के साथ शादी की। परंतु कुछ ही दिनों के बाद उनका संबंध टूट गया। सन 1947 से वे इलाहाबाद से "प्रतीक" का प्रकाशन करने लगे। "प्रतीक" का घेरा बहुत ही बड़ा था। "प्रतीक" ने नये साहित्य को मान्यता दी, नये आलोचक निर्माण किये और आगे "प्रतीक" न चल सका।

सन 1955 ई. में युनेस्को के निमंत्रण पर पश्चिमी यूरोप की यात्रा की, इस यात्रा ने कई रचनाओं के निर्माण की प्रेरणा मिली। 7 जुलाई 1956 में उनकी दूसरी शादी कपिला मलिक से हुई और वे प्रयाग में रहने लगे। अगस्त 1957 में जापान और फिलिपिन की यात्रा की। स्वदेश लौटने पर सन 1960 तक दिल्ली में रहें। अप्रैल 1960 में दूसरी बार यूरोप की यात्रा की। 1961 के सितंबर में अमेरिका के कॅलिफोर्निया विश्वविद्यालय में "भारतीय संस्कृति और साहित्य" के अध्यापक बनकर गये, जुलाई 1964 में स्वदेश लौटे तो दिल का दौरा पड़ा। कपिला जी ने सेवा की और स्वास्थ्य लाभ हुआ। इस बिमारी के बाद उनका व्यक्तित्व कुछ उभरा। वे पहले की अपेक्षा दुःख का आघात सहने में अधिक समर्थ बने। अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहे और धैर्यशील बने।

फरवरी 1965 में उन्होंने "दिनमान" साप्ताहिक पत्रिका का संपादन शुरू किया। छह महिने के अंदर ही "दिनमान" को उनकी कल्पना और निष्ठा ने हिन्दी का श्रेष्ठ साप्ताहिक पत्र बना दिया। 1965 में ही उनके छोटे भाई पूर्णानंदजी की मृत्यु हो गई और उनके परिवार की जिम्मेदारी उनपर आ पड़ी। साहित्य अकादमी ने सन 1965 में पाँच हजार रूपये का प्रथम पुरस्कार उनकी काव्य कृति "आंगन के पार द्वार" के लिए घोषित कर सम्मानित किया। 1966 में "अज्ञेय" जी पूर्व यूरोप की यात्रा के लिए निकल पड़े, इस यात्रा में वे रूमानियाँ, युगोस्लाव्हिया, रूस और मंगोलिया भी गये। युगोस्लाव्हिया में नोबेल पुरस्कार विजेता आन्द्रिच तथा स्लोवेनी कवि मातेइ बोर से मिले। वहाँ उन्होंने हिन्दी कविता और उपन्यास के युगोस्लाव्ह अनुवाद तथा युगोस्लाव्ह कविता और उपन्यास के हिन्दी अनुवाद की योजना

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

बनाई। 1966 में ही विदेश से लौटने पर "अज्ञेय" ने बिकानेर, अजमेर, सिमला, दिल्ली और एर्नाकुलम के अनुवादों में भाग लिया। समस्त भारतीय आधुनिक हिन्दी साहित्य के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये।

जनवरी 1967 में ऑस्ट्रिलिया में "एशियाई देशों में साहित्य विनिमय" शीर्षक विषय पर संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें उन्होंने भारतीय प्रतिनिधि के अधिकार, से भाग लिया। सन 1967 में ही "अज्ञेय" का पहला नाटक "उत्तर प्रियदर्शी" रंगमंच पर आ गया। इसी वर्ष उनके एक उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद प्रकाशित हुआ। आश्चर्य की बात है कि "अज्ञेय" विदेश यात्रा करते रहे थे और उनकी लेखनी बिना रूके साहित्य निर्मिति में लगी हुई थी।

सन 1971 में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन ने उन्हें डी.लिट. की मानद उपाधि दे दी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उन्हें "वाचस्पति" की उपाधि से सम्मानित किया। 1972 में उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने आपको "विद्यावारिधि" उपाधि दी।

"अज्ञेय" जी का व्यक्तित्व बहुमुखी और संश्लिष्ट होने के कारण इस परिचय में उसे पूरी तरह से समाहित नहीं किया जा सकता और ऐसा हमारा दावा भी नहीं है। "अज्ञेय" जी को 1978 को "भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार" "कितनी नावों में कितनी बार" इस कविता संकलन को मिला।

आपके व्यक्तित्व में विद्वत्ता, तथा गंभिरता के साथ सरलता का भी संयोग हुआ है। आप सरलता, मृदुभाषिता और नम्रता की दूसरी मूर्ति थे। विनोद प्रियता आपके स्वभाव का एक अंग था आपके वक्तृत्व में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की अपूर्व क्षमता थी। 4 अप्रैल 1987 ई. को इस महान साहित्यकार का निधन हुआ।

कृतित्व :

"अज्ञेय" जी का हिन्दी साहित्य को महत्त्वपूर्ण योगदान है। आपने काव्य संकलन, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विविध क्षेत्रों में अपने पांडित्य एवं प्रतिभा का परिचय दिया है। आपकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित हैं -

(क) काव्य संकलन :-

1. भग्नदूत (1933)
2. चिन्ता (1941)
3. इत्यलम् (1946)
4. हरी घास पर क्षणभर (1949)
5. बावरा अहेरी (1954)

6. इन्द्रधनुष रौंदे हुए थे (1957)
7. अरी ओ करूणा प्रभामय (1959)
8. आँगन के पार द्वार (1961)
9. आज के लोक प्रिय कवि - स.ही. वात्स्यायन "अज्ञेय" (डॉ. विद्यानिवास मिश्र द्वारा सम्पादित, 1963)
10. पूर्वा (1965)
11. सुनहले शैवाल (1966)
12. कितनी नावों में कितनी बार (1967)
13. क्योंकि मैं उसे जानता हूँ (1970)
14. सागर मुद्रा (1970)
15. पहले मैं सन्नाटा बुनता हूँ (1974)
16. महावृक्ष के नीचे (1977)

(ख) सम्पादित काव्य संकलन :-

1. तार सप्तक (1943)
2. दूसरा सप्तक (1951)
3. पुष्करिणी (1959)
4. तीसरा सप्तक (1959)
5. रूपाम्बरा (1960)
6. चौथा सप्तक (1979)

(ग) उपन्यास :-

1. शेखर : एक जीवनी, भाग - 1 (1941)
2. शेखर : एक जीवनी, भाग 2 (1944)
3. नदी के द्वीप (1951)
4. अपने अपने अजनबी (1961)

(घ) कथा संकलन :-

1. विपथगा (1937)
2. परम्परा (1944)
3. कोठरी की बात (1945)
4. शरणार्थी (1947)

5. जयदोल (1951)
6. अमरवल्ली और अन्य कहानियाँ (1954)
7. कडियाँ और अन्य कहानियाँ (1957)
8. अज्ञेय की कहानियाँ - भाग 3 (1961)
9. अज्ञेय की कहानियाँ - भाग 4 (1961)
10. ये तेरे प्रतिरूप (1961)
11. लौटती पगडंडियाँ (1975)
12. छोड़ा हुआ रास्ता (1975)

(ड़.) नाटक :-

1. नए एकांकी (सम्पादित, 1952)
2. उत्तर प्रियदर्शी (नाटय काव्य, 1967)

(च) निबंध एवं विचारात्मक गद्य :-

1. त्रिशंकु (1945)
2. सबरंग (1956)
3. आत्मनेपद (1960)
4. आधुनिक हिन्दी साहित्य (1965)
5. सबरंग और कुछ राग (1966)
6. हिन्दी साहित्य एक आधुनिक परिदृश्य (1967)
7. आलवाल (1971)
8. लिखि कागद कोरे (1972)
9. भवन्ती (1972)
10. अन्तरा (1975)
11. जोग **लिखी**(1977)
12. अद्यतन (1977)
13. संवत्सर (1978)
14. **स्रोत** और सेतु (1978)

(छ) यात्रा संस्मरण :-

1. अरे यायावर रहेगा याद (1953)
2. एक बूँद सहसा उछली (1961)

(झ) **पत्रकारिता :-**

1. सैनिक (साप्ताहिक, 1936-37)
2. विशाल भारत (मासिक, 1937-39)
3. भारती (मासिक, 1941)
4. प्रतीक (मासिक, 1947-52)
5. वाक् (त्रैमासिक, 1950)
6. दिनमान (साप्ताहिक, 1965)
7. नया प्रतीक (मासिक, 1974)
8. नव भारत टाइम्स (दैनिक, 1977)

(ज) **अंग्रेजी में लेखन :-**

1. श्रीकांत (शरतचन्द्र के मूल बँगला उपन्यास का अनुवाद, 1944)
2. द रेजिग्नेशन (जैनेन्द्रकुमार के उपन्यास "त्यागपत्र" का अनुवाद, 1946)
3. प्रिजन डेज एण्ड अदर पोयम्स (काव्य संकलन, 1946)

विशिष्ट पुरस्कार :-

साहित्य अकादमी पुरस्कार : "आँगन के पार द्वार" (कविता संकलन, 1964)

ज्ञानपीठ पुरस्कार : "कितनी नावों में कितनी बार" (कविता संकलन, 1978)

साहित्यिक व्यक्तित्व :-

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन का उपनाम "अज्ञेय" था। वे कवि, लेखक, पत्रकार और क्रांतिकारी विचारक थे। वे जब दिल्ली जेल में थे तब दो कहानियों को जैनेन्द्रकुमारजी के हाथों प्रेमचंद के "जागरण" पाक्षिक के लिए भेजा गया। प्रेमचंद ने लेखक का नाम पूछने पर जैनेंद्रजी ने "अज्ञेय" बताया तब से यही नाम उन्हें प्राप्त हुआ। "अज्ञेय" का अर्थ होता है जो जाना नहीं जा सकता। मृत्यु के बाद भी चार वर्ष तक वे "अज्ञेय" ही रहे। वे स.ही. वात्स्यायन नाम गद्य लेखन, संपादक के नाते, अन्य सब व्यवहारों में प्रयुक्त करते थे। कविता, कहानी, उपन्यास आदि के लेखन के लिए "अज्ञेय" नाम लिखते थे। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व के दो हिस्से थे -

1. व्यावहारिक वात्स्यायन और
2. रहस्य ओढ़े हुए "अज्ञेय"

इस दोहरे व्यक्तित्व या खंडित व्यक्तित्व से वात्स्यायन हमेशा अलग - अलग लोगों की दृष्टि में अलग अलग रूपों में प्रकट होते रहे। पिता के साथ उनके संबंध प्यार और तिरस्कार मिश्रित थे। शैशव में

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

इसी का वर्णन है। उनके पिता अनुशासन प्रिय, ममता भरे क्रोध वाले और पुराने पंडितों की तरह हर विवरण के विषय में सावधान थे। वात्स्यायनजी सन 1931 से ही क्रांतिकारियों के साथ ही हो गये थे।

लेखक के तीन प्रकार होते हैं -

"1. वे जो परिवार में बंधे रहते हैं।

2. वे जो परिवार से अलग रहते हैं।

3. परिवार में रहकर भी अपारिवारिक की तरह रहते हैं।"[2]

क्रांतिकारी आंदोलन और जेल के एकांतवास के कारण उनका व्यक्तित्व रेशम के कीडे की तरह बन गया। उनकी वृत्ति भ्रमर की तरह थी। वे घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे। लेकिन एक साथ पारिवारिक वात्सल्य और ममता भी दिखाते थे। और परिवार से एकदम अलग भी हो जाते थे। वे बहुज्ञ थे, कई भाषाओं के जानकार थे, पंजाबी उनकी मातृभाषा थी। आर्य समाजी प्रभाव के कारण घर पर संस्कृत और शुध्द हिन्दी में बोलते थे। उर्दू, बंगाली, गुजराती, तमिल भाषा भी बोलते थे। उन्होंने फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी का साहित्य भी पढ़ा था। वे बड़ईगिरी, दर्जीगिरी, यंत्रों के अनेक उपयोग जानते थे। सभी प्रकार के वाहन चलाना जानते थे। पदयात्रा से लेकर सायकिल, मोपेड़, ट्रक, जीप, कार चलाते थे। तथा इंजन, घुडसवारी, ऊंट की सवारी और हाथी की सवारी भी करते थे।

नदी, पर्वत, जंगल, समुद्र का ज्ञान उनका बहुत बड़ा था। शिल्पकला, स्थापत्य कला, चित्रकला, संगीत, नृत्य तथा नाट्यकला में उनकी गहरी रूचि थी। फोटोग्राफी के वे उस्ताद थे। फिल्म बनाने का उन्होंने फ्रान्स में शिक्षण लिया था। ज्ञान विज्ञान का हर विषय उन्हें प्रिय था। वे अंग्रेजी अच्छी लिख लेते थे। सबसे पहले वे क्रांतिकारियों की ओर आकृष्ट हुए।

"अज्ञेय" बहुत श्रमशील लेखक थे। अपनी और दूसरों की भी पांडुलिपि बहुत बारीकी से पढ़ते थे और संपादित करते थे। वे बहुत विनोद प्रिय थे। उन्हें जब क्रोध आता था तो वे अनियंत्रित हो जाते थे।

साहित्यिक विवादों में वे कभी नहीं पड़ते थे। उनके व्यक्तित्व में गरिमा और भव्यता थी। इसी कारण से उनके संबंध में भय-मिश्रित कुतूहल या आतंक छाया रहता था। वे एक अध्ययनशील व्यक्ति थे। उनकी रचनाओं में उनके गहन, विशाल अध्ययन और चिंतन का परिचय मिलता है। पाश्चात्य साहित्य के साथ-साथ उन्होंने यहाँ के धर्म, संस्कृति, दर्शन और साहित्य का गहरा अध्ययन किया था। उनकी प्रतिभा का एक विशेष रूझान था। उन्होंने आत्मानुभूति को ही अपनी रचना का आधार बनाया।

प्रेरणा एवं प्रभाव :-

लेखक की साहित्य-वस्तु की प्रेरणा का स्रोत समाज का जो वर्ग बनता है, उसी वर्ग के जीवन नियम, आचरण रीतियाँ, समस्याएँ और धारणाएँ आदि का चित्रण उसके साहित्य में मिलता है। "अज्ञेय" के उपन्यास साहित्य में साहित्य-वस्तु के जो प्रेरणा स्त्रोत हैं और उस वस्तु के प्रस्तुत करने का जो विशिष्ट रीतिवाद है - दोनों ही उन्हें जागरूक अभिजात वर्ग का लेखक सिध्द करते हैं।

"अज्ञेय" के उपन्यास पढ़ते समय समाज के एक विशेष प्रकार के वर्ग का ज्ञान होता है। यह वर्ग शिक्षित लोगों का है, जिनका रूप बहुत पुराना नहीं है। ज्ञान, शिक्षा, सत्ता और सुविधा के विशेष अवसर प्राप्त लोगों का यह वर्ग है। इस वर्ग की अपनी रीतियाँ विकसित हो रही हैं। इस कारण से इसे जागरूक अभिजात वर्ग का नाम दिया जा सकता है। "अज्ञेय" के उपन्यासों में भारतीय जनता और इस अभिजात वर्ग का अलगाव बड़ी तीव्रता से दिखाई देता है। उनकी साहित्य वस्तु के प्रेरणा स्त्रोत इस अभिजात वर्ग में ही मिलते हैं। " "शेखर : एक जीवनी " का शेखर जिन लोगों से घिरा है, वे सभी समाज में समृध्द तब के से आए हैं। यह परिश्रम करनेवाला वर्ग नहीं है। इन्हें किसी भी हालत में जनता नहीं कहा जा सकता। ये सभी पात्र प्रबुध्द अभिजात वर्ग के हैं और परिणामी है। शेखर भी इसी वर्ग का पात्र है—परिणामी है। इन पात्रों के सामान्य जनता से भिन्न अपने तौर-तरीके और आचरण-रीतियाँ हैं। इस वर्ग में भी भिन्नता के स्तर हैं, लेकिन यह भिन्नता उनके अपने वर्ग के अंतर्गत भिन्नता है, वर्गीकरण की भिन्नता नहीं। "[3]

भारतीय समाज, ज्ञान और लोगों के पिछड़ेपन को लेकर "अज्ञेय" के साहित्य में एक विशेष प्रकार की उदासीनता दिखाई देती है। "अज्ञेय" ने मौका मिलते ही पिछड़े हुए भारतीय समाज में उन्हें न समझनेवाले लोगों पर प्रहार किये हैं।

"अज्ञेय"जी की कविता पर पाश्चात्य प्रभाव दिखाई देता है। उन्होंने "आत्मनेपद" में यह स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है - "मेरी कविता हिन्दी में लिखी गई अंग्रेजी कविता है, ऐसा कहकर कुछ लोग समझते हैं कि उन्होंने प्रशंसा की हैं, कुछ समझते हैं कि महानिन्दा है। मैं तो नहीं समझता कि मेरी कविता में ऐसा कुछ है जो भारत की ही काव्य परंपरा द्वारा अनुमोदित न हो सकता है।"[4] "अज्ञेय" की प्रारंभिक रचनाओं पर अंग्रेजी कवि टेनिसन, ब्राऊनिंग, लॉरेन्स, इलियट आदि कवियों की कविता का प्रभाव है।

"अज्ञेय" पर फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक दर्शन का प्रभाव पड़ा है। यही प्रभाव उनके कथा साहित्य में भी दिखाई देता है। अज्ञेय के कथा साहित्य के साथ "मनोवैज्ञानिक" लेबल तभी से चिपक गया है। "अज्ञेय" के साहित्य में मनोविज्ञान के प्रभाव का जहाँ तक प्रश्न है, वह कविता से

अधिक कथा साहित्य में अनेक ढंग से व्याप्त दिखाई पड़ता है। फ्रायड़ के मनोविश्लेषण, विशेषतः स्वप्नविश्लेषण (Analysis of Dreams) से प्रभावित जो साहित्यिक आंदोलन दो विश्वयुध्दों के बीच में फ्रान्स में पनपा, वह था सुररियालिजम (: surrealism) अतियथार्थवाद। फ्रायड़ के उपचेतन मन के सिध्दान्त की भूमिका पर यह अवस्थित है।

"अज्ञेय" का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण फ्रायड से प्रभावित है। "अज्ञेय" के प्रथम उपन्यास "शेखर : एक जीवनी" में विशुध्द मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिशु मानस का सफल निरूपण हुआ है। "अज्ञेय" के सभी पात्र अहं भाव से प्रभावित होने कारण व्यष्टिवादी है। "अज्ञेय" ने आधुनिकता को अधिक गहरे रूप में स्वीकारा है। "शेखर : एक जीवनी" की घटनाएँ शेखर की विचारधारा के साथ-साथ चलती हैं। उनका अपना कोई महत्त्व नहीं। शेखर का व्यक्तित्व सर्वोपरि है। मनोविश्लेषणात्मक पध्दति के निर्वाह स्वरूप अज्ञेय ने अपने उपन्यासों में बौध्दिकता को सर्वोपरि स्थान दिया है। भावुकता का महत्त्व कम है। फ्रायड के "अहंभाव" और "यौन भावना" का भी प्रभाव "अज्ञेय" के उपन्यासों में पूर्ण रूप से प्रवाहित होता हुआ दिखाई पड़ता है। लेकिन मानवीय संवेदनाओं का प्रभाव भी उनके उपन्यासों में परिलक्षित होता है। "अज्ञेय" ने जिस समय "शेखर : एक जीवनी" की रचना की, वह राष्ट्रीय चेतना का युग था और इसी के प्रभाव स्वरूप शेखर का पूर्ण एवं आंशिक रूप में भुवन का चित्रण एक क्रान्तिकारी के रूप में ही हुआ है।

जैनेन्द्र और इलाचंद्र जोशी उपन्यासकार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण लेकर चले हैं उसी समय "अज्ञेय" का हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में पदार्पण होता है। आधुनिक उपन्यासों में मनोविज्ञान के प्रयोग से उसके कलेवर में पर्याप्त अन्तर आया। "अज्ञेय" के पदार्पण से पूर्व मनोविज्ञान का उपयोग एक बहुत ही निरपेक्ष ढंग से किया गया है। किन्तु "अज्ञेय" ने जैनेन्द्र और इलाचंद्र जोशी दोनों की कला को एक समन्वित एवं श्रेष्ठ रूप में परिलक्षित किया है। "अज्ञेय" का मनोविश्लेषण सैध्दान्तिक एवं व्यावहारिक अपने पूर्ववर्ती उपन्यासकारों से सर्वथा श्रेष्ठ, परिनिष्ठत कलात्मक तथा प्रभावोत्पादक है।

"अज्ञेय" के उपन्यासों का वैशिष्ट्य :-

वास्तविकता तो यह है कि आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के संदर्भ में "अज्ञेय" का कथा साहित्य देखा जाय तो वह एक ओर भारतीय जन जीवन, भारतीय जन जीवन की चेतना तथा विषमताओं आदि का यथार्थ चित्रण करता है। तो दूसरी ओर अपनी शैली शिल्प तथा मानव मन की शाश्वत अनुभूतियों को कलात्मक ढंग से स्पष्ट करता है। "अज्ञेय" के कथा साहित्य में आधुनिक युग का यथार्थ और पूर्ण प्रतिबिंब दिखाई देता है। शिल्पविधान की दृष्टि से अथवा भाव विधान की दृष्टि से "अज्ञेय" का कथा साहित्य आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करता है। हिन्दी उपन्यास

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

साहित्य में "अज्ञेय" का एक विशेष स्थान है। उनके पूर्ववर्ति और उनके बाद के काल के उपन्यासों की तुलना में परिमाण की दृष्टि से थोडा लिखने के बाद भी "अज्ञेय" ने हिन्दी साहित्य परंपरा में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया है।

1. शेखर : एक जीवनी :-

"अज्ञेय" का यह उपन्यास बहुत समय तक अधिक चर्चित और विवादास्पद रहा है। शेखर के माध्यम से हिन्दी उपन्यास जगत् में "अज्ञेय" ने प्रवेश किया और हिन्दी उपन्यास ने एक नये युग में प्रवेश किया। संभावनाओं की दृष्टि से सांकेतिक रूप में इसका महत्त्व अधिक है। "अज्ञेय" एक प्रयोगवादी साहित्यिक थे। सभी रचनाओं में उन्होंने नये-नये प्रयोग किये।

"शेखर : एक जीवनी" में एकत्रित पीड़ा को सिर्फ एक रात में देखे दृश्य को शब्दांकित करने का प्रयत्न है। "शेखर : एक जीवनी" में मनोविश्लेषण के द्वारा एक विशेष विचार तत्त्व के निर्माण का प्रयत्न भी है। इस उपन्यास में शेखर नामक विद्रोही व्यक्ति के मनोविश्लेषण की कथा है।

"अज्ञेय" के पूर्ववर्ति प्रेमचंद कालीन उपन्यासों की कथावस्तु की तुलना में "शेखर : एक जीवनी" की कथा एकदम अलग है। इस उपन्यास का कथानक सुनियोजित ढंग का नहीं है। इतना ही नही अलग - अलग दिशा तथा गतियों का विश्लेषण है। यही विश्लेषण उपन्यास को कथा का रूप देता है। शेखर के शैशव काल से उपन्यास का प्रारंभ होता है। और जीवन के अंत तक कुछ प्रमुख तथा आकर्षक जीवन चित्र इसमें आ जाते हैं। शेखर के शैशव कालीन चित्रण में "अज्ञेय"जी ने अपने जीवन की अनेक घटनाओं को चुना है। फिर भी शेखर लेखक के व्यक्तित्व का दूसरा रूप नहीं है। "अज्ञेय" मानते हैं "शेखर" के जीवन दर्शन में "स्वातंत्र्य खोज" है। शेखर के स्वातंत्र्य की खोज में टूटी हुई नीतिविषयक परंपरा के बीच नीति के मूल स्रोत की खोज है।

इस उपन्यास पर फ्रायडवादी विचार दर्शन का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। अहं, भय और काम ये तीन मुलभूत प्रवृत्तियाँ शेखर के चरित्र निर्माण में कहीं मदद करती हैं तो कहीं बाधायें डालती हैं। शेखर के चरित्र निर्माण में बौध्दिकता का विरोध अबौधिकता ने किया है। उसके विकास में भय और काम बाधा डालते हैं और उसके अहं पर प्रहार करते हैं। इस उपन्यास में व्यक्तिवाद के साथ सामाजिकता भी आ गई है। जहाँ व्यक्तिवाद का आधार विज्ञान है वहाँ सामाजिकता का आधार आवेग है। "शेखर : एक जीवनी" एक प्राणवान क्रान्तिकारी की अपनी जीवन-यात्रा के अन्तिम पड़ाव की स्थिति फाँसी की छाया में - अपने विगत जीवन का प्रत्यावलोकन है।"[5]

2. नदी के द्वीप :-

"अज्ञेय" का यह दूसरा उपन्यास है। खंड रूप में लिखा गया उपन्यास है। इसमें कथात्मक

एकता की दृष्टि से विभिन्न पात्रों का परस्पर पत्र व्यवहार और अंतराल दिखाया गया है। जैसे "शेखर: एक जीवनी" आत्मकथात्मक ढंग से लिखने के कारण इस युग की महत्त्वपूर्ण कृति है, उसी प्रकार "नदी के द्वीप" खंड रूपों में लिखे गये उपन्यासों में महत्त्वपूर्ण स्थान पाता है। इस उपन्यास का प्रकटीकरण पक्ष विशेष शक्तिशाली है। शिल्प विधान की दृष्टि से यह उपन्यास अद्वितीय है। "नदी के द्वीप" का कथानक अत्यन्त संक्षिप्त है लेकिन अज्ञेय की सूक्ष्म तथा कलात्मक विश्लेषणप्रिय प्रतिभा ने इसे एक उपन्यास का स्वरूप प्रदान किया है। कथानक के इस विस्तार के मूल में लेखक की कविचेतना ही है, जो स्थूल कथांशो को गति देती हुई सूक्ष्म एवं भावनात्मक अंशों में रम जाती है।"[6] पूरी तरह से कथानक का विस्तार होने पर भी लेखक की संवेदनशिलता ने उपन्यास के प्रभाव को अखंड बनाये रखने का प्रयत्न किया है।

"नदी के द्वीप" में बहुत कुछ शेखर का विकसित रूप दिखाई देता है। "नदी के द्वीप" का भुवन शेखर का ही विकसित रूप है जो नायक के रूप में स्थापित हुआ है। यहाँ "अज्ञेय" का दृष्टिकोण व्यक्ति और समाज के संघर्षों से हट जाता है। और नीतिविषयक समस्यायें तथा प्रेम कथायें आदि तक वह मर्यादित हो जाता है। "नदी के द्वीप" खुले आम एक प्रेम कथा है।

3. अपने अपने अजनबी :-

"अज्ञेय" जी का अब तक का यह अंतिम उपन्यास है। इसमें उपन्यास की विशेषता और कथानक की परिसीमता का प्रयोग कौशल्य के साथ हुआ है। इसमें भी "अज्ञेय" की व्यवितगत विशिष्टता "प्रयोग की नवीनता" देखने को मिलती है। यह एक प्रतीकात्मक और दु:खान्त उपन्यास है। यह एक प्रथम आधुनिक तथा अस्तित्ववादी उपन्यास है। उन्होंने आधुनिकता के विज्ञान विरोधी पक्ष को ग्रहण किया है।

इसके माध्यम से "अज्ञेय" की एक नई रचना पध्दति का विकास हुआ है। इस उपन्यास में पौर्वात्य और पाश्चात्य की मृत्यु संबंधी धारणाओं का खंडण-मंडण हुआ है। यह उपन्यास मृत्यु की भयंकारिता से भरा पड़ा है। "अज्ञेय" का यह अंतिम उपन्यास अपने पूर्ववर्ति उपन्यासों के कथानक के अनावश्यक विस्तार के दोष से बचा है। लेकिन वैचारिक बोझिलता इसमें आ गई है।

उपन्यासों में जीवन दर्शन :-

"शेखर : एक जीवनी" इस उपन्यास की मुख्य विशेषता इसकी व्यक्तिवादी जीवन दृष्टि है। लेखक व्यक्तिवादी दृष्टि के प्रकाश में ही आज के युग की समस्याओं के समाधान को ढूँढता है। इसमें व्यक्ति के महत्त्व को सब से ऊपरी स्थान दिया है। व्यक्ति के विचारों को अगर स्वतंत्रता मिल जाती है तो उसका विकास हो सकता है। यहाँ "अज्ञेय" के विचारों पर मनोविश्लेषणवादी फ्रायड के विचार दर्शन

का परिणाम दिखाई देता है। अहं, भय और लिंग संबंधी विचार व्यक्ति की मूल प्रेरणाएँ हैं। इन प्रेरणाओं पर किसी भी प्रकार का बंधन उन्हें मान्य नही है। बंधन तो अनिष्ट और अमंगल मनोभावों पर ही योग्य होते हैं। अहं, भय और लिंग संबंधी विचार जीवन की प्रेरणादायक शक्तियाँ हैं। इन शक्तियों को निंदनीय अथवा अशुभ मानना अनुचित और अन्यायपूर्ण है। इसलिए व्यक्तिवाद ने सामाजिक बंधनों और वर्तनाओं को अशुभ माना है। और इसी में व्यक्ति के पूर्ण विकास की संभावनायें देखी हैं। व्यक्तिवादी विचारधारा में सामाजिक नियम और नैतिकता का कोई स्थान नही है। इसमें व्यक्ति की बंधनरहित तथा मुक्त सत्ता की रक्षा की अपेक्षा की गई है। शेखर इसका उदाहरण है।

"नदी के द्वीप" उपन्यास में भी फ्रायड़ के मनोविश्लेषणवादी विचार का प्रभाव दिखाई देता है। शेखर का विकसित रूप भुवन है। यहाँ भी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्त्व दिया गया है। व्यक्तिगत विचारों को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों के पात्र शिक्षित, आत्मकेंद्रित, स्वाभिमानी और विचारशील प्राणी होते हैं। इसमें मृत्यु, प्रकृति, समाज, ईश्वर, जीवन, जगत्, स्त्री-पुरूष, विवाह, प्रेम और यौन संबंधी उनकी धारणाएँ उनके अपने जीवन-जगत् वास्तव अनुभवों से निर्माण होती हैं। व्यक्ति को महत्त्व देनेवाले उपन्यासों में जीवन और जगत् की समस्याओं के समाधान और उनके उपयोग का मूल्य जानना व्यक्तिहित की भावना से हुआ है। "नदी के द्वीप" में "अज्ञेय" का व्यक्तिवादी कवि रूप ही दिखाई देता है। इस उपन्यास के दोनों पात्र व्यक्तिवाद और स्वच्छन्दतावाद को ही महत्त्व देते हैं। रेखा आर्थिक दृष्टि से अपने पैरों पर खड़ी है और शिक्षित स्त्री है। अपने जीवन का निर्णय वह खुद की इच्छा के अनुसार करती है। "नदी के द्वीप" के रेखा, भुवन और गौरा अपने आप को जीवन प्रवाह में द्वीप की तरह उपमा योग्य बनाते हैं और व्यक्तिवाद का ही समर्थन करते हैं।

"अपने अपने अजनबी" इस उपन्यास में अन्य उपन्यासों की तरह सभी जगहों पर अस्तित्ववादी जीवन दृष्टि का परिचय मिलता है। व्यक्ति और समाज एक दूसरे के लिए पूरक हैं। अस्तित्ववादी विचार धारा का प्रारंभ हसरेल, हेडेगर और डेनिशचिन्तक कीर्केगार्द, नीत्शे, यास्पर्स, दस्तोवस्की, मार्शल, सार्त्र आदि की विचार-सरणी में मिलता है। अस्तित्व की स्थिति तत्त्व से पहले है। तत्त्व का अर्थ मनुष्य की प्रकृति और अस्तित्व का अर्थ कर्मसमूह है - जिसके कारण मनुष्य की जागतिक स्थिति स्पष्ट होती है। इस प्रकार अस्तित्ववादी विचार की भूमि पर मनुष्य, जीवन के जीवित संदर्भ में सोचता है। इस उपन्यास में अस्तित्ववादी विचारों के कुछ प्रतीकों का उपयोग का होना स्वीकार किया गया है। इसमें अस्तित्ववाद के साधन प्राप्त हैं। सार्त्र के अनुसार मनुष्य का अर्थ है आजादी। इस आजादी का अनुभव मनुष्य के मन में तब होता है जब वह अपनी जीवन प्रक्रियाओं के बारे में ध्यान से चिंतन-मनन करता है और अनुमान निकालता है। यूरोपीय साहित्य में अस्तित्ववाद की बहु चर्चित

प्रवृत्ति दिखाई देती है। अस्तित्ववाद में तर्क को अनुपयोगी समझा जाता है। "अज्ञेय" पर सार्त्र का प्रभाव दिखाई देता है। मनुष्य के पूर्ण अस्तित्व में विश्वास रखना इस विचार धारा का मुख्य सूत्र है।

जीवन दर्शन :-

"अज्ञेय" छायावाद के बाद हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित और विवादास्पद रचनाकार है। महत्त्वपूर्ण भी वे रहे हैं। लेकिन अज्ञेय का साहित्य पढ़ते समय मुझे हमेशा यह अहसास होता रहा है कि उनके साहित्य में प्रतिफलित आशय बहुत इकहरा और आत्मनिष्ठ है। व्यक्ति-स्वातंत्र्य अज्ञेय-साहित्य की केन्द्रीय विषय रहा है। उनके साहित्य में व्यक्ति-स्वातंत्र्य के मूल्य का प्रतिफलन परिस्थितियों और शक्तियों के साथ एकत्रित प्रक्रिया में न होकर एक निरपेक्ष सत्ता अधिक है। वे इसे व्यक्ति की मूलभूत अस्तित्वगत विशेषता मानते रहे हैं। अज्ञेय की चिन्ता व्यक्ति-जीवन की चिन्ता है, सामाजिक जीवन की नहीं। उनके यहाँ स्वतंत्र व्यक्तित्व का लेन-देन समाज के साथ नहीं होता, वह शून्य अथवा विराट के साथ घटित होता है। लेकिन जब हम अज्ञेय के कथा साहित्य को परखते हैं तो पाते हैं कि उसमें उस भारतीय समाज को साहित्य का विषय बनाया ही नहीं गया है, जो जातीय-प्रतिभा और समन्वित संस्कृति की संभावनाओं को धारण करता है। वे अपने साहित्य का विषय उस समाज को बताते हैं जिसका संपूर्ण भारतीय समाज और संस्कृति के साथ संबंध अनुषंगिक है।

अज्ञेय का साहित्य पढ़ते समय समाज के एक विशिष्ट वर्ग का बोध होता है। यह समाज शिक्षित लोगों की सोसायटी है जिसका रूप बहुत पुराना नहीं है। भारत में यह नया प्रबुध्द अभिजात-वर्ग पश्चिमीकरण के प्रभाव स्वरूप अस्तित्व में आया है। अज्ञेय के साहित्य में विद्यमान विद्रोह, आत्म-चेतना, बेचैनी और आत्मरक्षा की प्रवृत्तियाँ तथा नैतिक और बौध्दिक समस्याएँ संपूर्ण भारतीय समाज की प्रवृत्तियाँ और समस्याएँ नहीं हैं। उनके संपूर्ण साहित्य में एक ऊँची, तटस्थ, गौरवशाली मुद्रा विद्यमान है।

"शेखर : एक जीवनी" हिन्दी का पहला मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसमें शेखर का मनोविश्लेषणात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। अतः उसके "अहं" को भी सैक्स से संबंधित रखा गया है। वह अपने "अहं-वाद" की अग्नि में सबसे करूणोत्पादक आहुति अपने प्रेम की ही दे रहा है - शशि के प्रेम की। उसका अहंकार उसे किसी के भी सामने झुकने से रोकता है। वह सबसे पूजित होना चाहता है और शेखर को समर्पण की भावना नारी के प्रति तो कतई स्वीकार नहीं। "अज्ञेय प्रेम को कोई महत्त्व नहीं देते। प्रेम को वे एक आदर्श मानते हैं जो व्यावहारिकता की वस्तु नहीं। वासना को वे वास्तविकता मानते हैं।"[7]

"शेखर : एक जीवनी" की ही भाँति व्यक्तिपरक है और यहाँ आकर तो लेखक स्वयं भी यह दावा नहीं कर सका है कि उसके चरित नायक के स्वर में लेखक के युग का स्वर बोलता है।

रेखा, भुवन, गौरा और चन्द्रमाधव के चौराहे पर प्रत्येक का अपना विशिष्ट रूप है - विशिष्ट दिशा है। कोई भी पात्र किसी वर्ग का प्रतिनिधि नहीं है। उनका चिंतन खुद का है, किसी वर्ग, समाज एवं युग का चिन्तन नहीं।

"अपने-अपने अजनबी" भी इसी श्रृंखला की एक कडी है। मृत्यु से सतत संघर्षशील प्राणी समाज की बात करे भी तो कैसे? संपूर्ण उपन्यास में मृत्यु का भयावह वातावरण चित्रित है।

"अज्ञेय" के उपन्यासों में जीवन दर्शन की विविधताएँ :-

" "शेखर : एक जीवनी" का कथानक शेखर का आत्मविश्लेषण ही है। इसके कथानक की मौलिकता तथा महत्त्व "शिशु तथा बालमानस की सूक्ष्म तरंगों" कौतुहल और जिज्ञासाओं, सहज प्रवृत्तियों, उस पर पड़नेवाले-प्राणी-प्रकृतिगत परिवेश के सूक्ष्म प्रभावों और माँ-बाप, शिक्षकों आदि के अमनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहारों से उत्पन्न विकारों के मनोविज्ञान सम्मत सूक्ष्म विश्लेषण के कारण है।"[8] हर घटना का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, एक संवेदनशील कलाकार के हृदय पर पड़नेवाला असर इसमें दिखाया गया है। उसके चारित्रिक गुण, दृढ़ता, निर्भीकता और स्वाभिमान कैसे बढ़ता गया यह स्पष्ट किया है। माँ का स्वभाव ध्वंसात्मक बनता है। परंतु बहन उसे अधिक सहानुभूति देकर उसे कोमल बनाती है।

जन्म से ही जिज्ञासू एवं बौध्दिक विश्लेषण प्रिय नायक शेखर की जिज्ञासाएँ जब पूरी तरह से उतर नही पातीं, तो धीरे-धीरे उसके मन में मानसिक ग्रंथि का रूप लेती है। माँ का वात्सल्य, बहन के प्रति प्रेम, सैक्स आदि से किशोर मन में पैदा होनेवाली भावना और वासना के घात-प्रतिघात शेखर बहुत सूक्ष्मता से अंकित करता है। धीरे-धीरे उसमें विद्रोह वृत्ति बढ़ती है। उसका विद्रोह किसी एक वर्ग, संस्था या समाज के प्रति नहीं है। उसका विरोध रूढ़ धर्म के प्रति भी नहीं है। मानो विद्रोह ही उसका धर्म है। वह अपने स्वयं के प्रति विद्रोही है। उसकी सतत चेष्टा व्यक्ति की स्वतंत्रता के मूल्य की प्रतिस्थापना की ओर है। याने एक ओर यथास्थितिवादी, समाज को ज्यों-का-त्यों रखनेवाली विचारधारा है। और दूसरी ओर उसे पूरी तरह से बदल देनेवाली क्रांतिकारी मानवतावादी विचारधारा है। इन दो विचारधाराओं के संघर्ष और द्वंद्वात्मकता से शेखर के चरित्र का निर्माण हो जाता है।

शेखर के व्यक्तित्व निर्माण का मूलाधार अविश्वास की प्रतिक्रिया है। शेखर के विकास के साथ-साथ उसमें एक ओर नैतिक दृष्टि का विकास होता है और दूसरी ओर सौन्दर्य बोध का। शेखर के व्यक्तित्व में विद्रोह चेतना एवं सौन्दर्य चेतना दोनों की ही प्रबला दृष्टिगोचर होती है। शशि "शेखर : एक जीवनी" का महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली चरित्र है। शशि ही शेखर के निर्माण में स्वयं को उत्सर्ग कर देती है और इसी आत्मोसर्ग में वह नारीत्व की सिध्दि प्राप्त करती है।

फ्रायडीयन मान्यता के अनुसार ही इस उपन्यास में शिशु शेखर की चेतना का विश्लेषण किया है। शेखर के चरित्र में मनोविज्ञान की अन्य प्रवृत्तियाँ भय, काम, अहं एवं कुंठा का विकसित रूप देखने को मिलता है। शेखर द्वारा किये गये आत्मविश्लेषण में स्मृतियों का विश्रृंखलित रूप ही अधिक सार्थक दिखलाई पड़ता है। पूर्व-दीप्ति शैली के अतिरिक्त अज्ञेय ने अपने इस उपन्यास में आवश्यकतानुसार यात्रा विवरण, रेखाचित्र, प्रतीक-पध्दति, पत्र-शैली का प्रयोग किया है। "शेखर : एक जीवनी" की भाषा में प्रसंगानुसार कोमल-कांति भी है।

"यह उपन्यास एक ओर प्रेमचंद युग के सामाजिक समस्या प्रधान यथार्थ मूलक आदर्शवादी उपन्यास शैली से एकदम भिन्न, यह नया मोड हिन्दी उपन्यासों के विकास में प्रस्तुत करता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकारों में जैनेंद्रकुमार और इलाचंद्र जोशी के साथ "अज्ञेय" का नाम लिया जाता है। यद्यपि अज्ञेय की उपन्यास शैली कहीं अधिक गद्यकाव्यात्मक और उनकी भाषा प्रसाद के निकट, यानी संस्कृत बहुला है।"[9]

"नदी के द्वीप" उपन्यास खंड रूपों में लिखी गई चार अभिजात्य वर्गीय पात्रों की कथा है, जिसमें क्रमबध्दता के निर्वाह के लिए पात्रों तथा अन्तरालों का आश्रय लिया गया है। "नदी के द्वीप" के कथानक में "दु:ख" या "पीड़ा" के स्वत:वरण का दर्शन अभिव्यंजित हुआ है। "नदी के द्वीप" में आये चरित्रों की भी अपनी विशेषता है। इसका नायक भुवन शेखर के विकसित रूप का ही प्रतिबिंब है। शशि का स्थान रेखा ने ले लिया है लेकिन रेखा का चरित्र शशि से अधिक विकासवान और पुष्ट है। "नदी के द्वीप" में अज्ञेय हमारे सामने मौलिक शैलीकार के रूप में आते हैं। भाषा का निखार इस उपन्यास में दर्शनीय है। इस उपन्यास की भाषा सर्वत्र ही उन्नत, आकर्षक एवं प्रभावशाली है। "नदी के द्वीप" उपन्यास में पत्रात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। पत्रात्मकता इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता है।

"अपने-अपने अजनबी" इस उपन्यास में प्रेमचन्दोत्तर युगीन कथानक की परिसीमता का सफल दिग्दर्शन हुआ है। इस उपन्यास का कथानक संक्षिप्त होते हुए भी गहन व्यापकत्व से परिप्लावित है। मृत्यु के साक्षात्कार में जीवन-दर्शन का विवेचन ही लेखक का मुख्य उद्देश्य है। "नदी के द्वीप" से अज्ञेय का झुकाव किर्केगार्द, सार्त्र, यास्पर्स, ब्यूबर आदि अस्तित्ववादी दार्शनिकों की विचारधारा की ओर बढ़ने लगा। मनुष्य स्वयं अपनी नैतिकता, अपनी नियति, अपनी स्वतंत्रता के क्षण का चुनाव करता है, यह विचार और भी प्रबल रूप से उनके उपन्यास "अपने-अपने अजनबी" में स्पष्ट हुआ है। बर्फ में दबी सेल्मा और योके की मृत्यु के क्षण की प्रतीक्षा के पूर्व का यह चित्रण, अंत में मृत्यु के प्रति विचारों का द्वन्द्व दर्शाता है।

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

"अपने-अपने अजनबी" का कथानक पर्याप्त क्षीण है और इस कथा-क्षीणता का कारण उपन्यास की चरित्र प्रधानता, विचार-बहुलता तथा वातावरण-परिसीमा एवं घटनाओं की सीमितता है। "अपने-अपने अजनबी" पूर्ण रूप से डायरी शैली में लिखा गया है। डायरी के माध्यम से हम योके और सेल्मा के चारित्रिक संघर्ष से परिचित होते हैं। क्योंकि डायरी के माध्यम से व्यक्ति अपने भावों, विचारों का अच्छी तरह आलेखान कर सकता है। विदेशी वातावरण के अनुसार ही विदेशी पात्रों के स्वाभाविक भाषा प्रयोग हमें कहीं-कहीं तो उपन्यास को विदेशी उपन्यास का अनुवाद होने का भ्रम उत्पन्न कर देते हैं। "अपने-अपने अजनबी" इस उपन्यास में भी फ्लैशबैक टेकनीक का प्रयोग हुआ है।

हिन्दी उपन्यासों में वैचारिक क्षेत्र में नव्यता के होते हुए भी शिल्प में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ था। अज्ञेय जी ने ही सर्व प्रथम शिल्पों का प्रयोग किया है, इसलिए उनका ऐतिहासिक महत्त्व भी है।

???

संदर्भ :-

1. अज्ञेय का उपन्यास साहित्य - डॉ. दुर्गाशंकर मिश्र, सं. 1976, पृ. 5
2. हिन्दी के साहित्य निर्माता "अज्ञेय" - प्रभाकर माचवे, सं. 1991, पृ. 9
3. अज्ञेय : चिन्तन और साहित्य - डॉ. प्रेमसिंह, प्र.सं. 1987, पृ. 139
4. आत्मनेपद - "अज्ञेय", सं. 1960, पृ. 29
5. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि - सत्यपाल चुघ, सं. 1965, पृ. 32
6. अज्ञेय का कथा साहित्य - ओम प्रभाकर, सं. 1966, पृ. 53
7. अज्ञेय की औपन्यासिक कृतियाँ - कुसुम त्रिवेदी, सं. 1976, पृ. 70
8. अज्ञेय के उपन्यासों की शिल्पविधि - सत्यपाल चुघ, सं. 1965, पृ. 33
9. हिन्दी के साहित्य निर्माता "अज्ञेय" - प्रभाकर माचवे, सं. 1991, पृ. 54

000